प्रशिक्षण मॉड्यूल
भारत के आपराधिक कानूनों में हालिया बदलाव

आपको क्या जानना चाहिए

पॉपुलर एजुकेशन एंड एक्शन सेंटर (पीस)

भारत के आपराधिक कानूनों में हालिया बदलाव: प्रशिक्षण मॉड्यूल

आपको क्या जानना चाहिए

पॉपुलर एजुकेशन एंड एक्शन सेंटर (पीस)

मार्च 2025

मुखपृष्ठ डिज़ाइन और लेआउट: मोहित सिंह

***मॉड्यूल के लेखक*:** प्रणव वर्मा

संपादकीय सहायता
मंगला वर्मा
विपुल कुमार
जितेंद्र चाहर

मुद्रक
स्वस्तिक ट्रेडर्स
ए-१०, सेक्टर ६५, नोएडा गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश पिन कोड - २०१३०१ फ़ोन: ९९९९६२२०३४

इस प्रशिक्षण नियमावली में प्रकाशित सामग्री कॉपीराइट प्रतिबंधों से मुक्त है। इस सामग्री की प्रतिलिपि बनाने, वितरित करने या उपयोग करने पर कोई प्रतिबंध नहीं है। सीमित वितरण के लिए, जनहित में
प्रकाशक: पॉपुलर एजुकेशन एंड एक्शन सेंटर (पीस)
मार्च २०२५

विषय-सूची

1. मॉड्यूल का परिचय

2. नए कानूनों का परिचय

3. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और बदलाव की आवश्यकता

4. नए कानून के तहत पीड़ितों और आरोपियों के अधिकार

5. अपराधों पर नए कानूनों की प्रतिक्रिया

6. आपराधिक न्याय प्रणाली की जवाबदेही: नए अपराध और कड़ी सज़ाएँ

अध्याय 1: मॉड्यूल का परिचय

यह ट्रेनिंग महत्वपूर्ण क्यों है?

भारत की आपराधिक न्याय प्रणाली में तीन औपनिवेशिक कानूनों को बदलकर एक ऐतिहासिक परिवर्तन आया है:

→ भारतीय न्याय संहिता (BNS), 2023 - जिसने भारतीय दंड संहिता (IPC), 1860 की जगह ली है

→ भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS), 2023 - जिसने दंड प्रक्रिया संहिता (CrPC), 1973 की जगह ली है

→ भारतीय साक्ष्य अधिनियम (BSA), 2023 - जिसने भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 की जगह ली है

ये नए कानून व्यापक बदलाव लाए हैं - अपराधों की नई परिभाषाओं और पुलिस प्रक्रियाओं से लेकर डिजिटल सबूत और पीड़ितों की सुरक्षा तक। हालांकि, हाशिए पर पड़े समुदाय - दलित, आदिवासी, महिलाएं, धार्मिक अल्पसंख्यक और शहरी गरीब - अक्सर इन बदलावों से अनजान रहते हैं, जिससे वे शोषण और अन्याय के प्रति संवेदनशील बने रहते हैं।

यह प्रशिक्षण मॉड्यूल कार्यकर्ताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए डिज़ाइन किया गया है ताकि वे इन कानूनी सुधारों को सरल, सुलभ भाषा में समझाने के लिए एक दिवसीय (6 घंटे) कार्यशालाएँ आयोजित कर सकें। प्रत्येक अध्याय को एक घंटे के इंटरैक्टिव सत्र के रूप में संरचित किया गया है, जिससे यह

सुनिश्चित हो सके कि जमीनी स्तर के समुदाय नई प्रणाली के तहत अपने अधिकारों को समझ सकें।

यह मॉड्यूल किसके लिए है?

यह ट्रेनिंग खास तौर पर इन लोगों के लिए डिज़ाइन की गई है:

→ दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक, महिलाएँ और मज़दूरों जैसे वंचित समूहों के साथ काम करने वाले सामुदायिक कार्यकर्ता।

→ पुलिस की ज्यादती या गलत गिरफ्तारी का शिकार हुए लोगों की मदद करने वाले सामाजिक कार्यकर्ता।

→ कानूनी सहायता से जुड़े स्वयंसेवक, जो आम लोगों को कानून समझाने में मदद करते हैं।

→ गाँव और शहरों में जागरूकता कार्यक्रम चलाने वाले ज़मीनी स्तर के शिक्षक।

यह ट्रेनिंग इतनी ज़रूरी क्यों है?

हाशिए पर रहने वाले समुदायों को अक्सर इन समस्याओं का सामना करना पड़ता है:

→ नए अपराधों की जानकारी न होना (जैसे, 'आतंकवाद' की अस्पष्ट परिभाषाएँ, जिनसे गलत गिरफ्तारियाँ होती हैं)।

→ जटिल प्रक्रियाओं के कारण न्याय में देरी (तेज़ सुनवाई के वादों के बावजूद)।

→ पुलिस द्वारा बढ़ी हुई शक्तियों का दुरुपयोग (हिरासत की लंबी अवधि, डिजिटल सबूत का अनिवार्य होना)।

कार्यकर्ताओं को इन कानूनों को सरल बनाना क्यों आवश्यक है?

कार्यकर्ताओं को इन कानूनों को आसान भाषा में समझाना होगा, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि:

→ समुदाय अपने अधिकारों को जानें (जैसे, ज़ीरो एफआईआर, पीड़ित मुआवजा)।

→ वे कानूनी जोखिमों को पहचानें (जैसे, विरोध प्रदर्शनों के लिए कड़ी सज़ाएँ)।

→ कानूनों के दुरुपयोग होने पर वे जवाबदेही की मांग कर सकें।

आइए शुरू करते हैं!

अध्याय 2: नए कानूनों का परिचय

ट्रेनिंग का उद्देश्य:

इस खंड के अंत तक, प्रतिभागी ये समझ पाएंगे:

— ट्रेनिंग का मकसद क्या है।

— नए कानून कानूनी और कानून प्रवर्तन (पुलिस) प्रक्रियाओं को कैसे प्रभावित करते हैं।

ट्रेनिंग का तरीका:

→ **आइसब्रेकर गतिविधि (5 मिनट):** प्रतिभागियों से पूछें, "जब आप 'आपराधिक कानून' सुनते हैं, तो

आपके मन में क्या आता है**?"** उनके जवाब एक फ्लिपचार्ट पर लिखें।

→ **समूह चर्चा (5 मिनट):** आज के आपराधिक न्याय में आने वाली मुख्य चुनौतियों पर चर्चा करें। इन चुनौतियों को नए कानूनों पर ट्रेनिंग की ज़रूरत से जोड़ें।

→ मुख्य चर्चा के बिंदु:

- हम अपने आपराधिक कानूनों को क्यों बदल रहे हैं**?**
- यह ट्रेनिंग समुदाय के सदस्यों और ज़मीनी स्तर के कार्यकर्ताओं की कैसे मदद करेगी**?**

नए आपराधिक कानूनों को समझना क्यों ज़रूरी है:

इस खंड के अंत तक, प्रतिभागी ये समझ पाएंगे:

— कानूनी बदलावों का महत्व क्या है।

— नए कानून अलग-अलग लोगों/संस्थाओं (**stakeholders)** को कैसे प्रभावित करते हैं।

ट्रेनिंग का तरीका:

→ **केस स्टडी (10 मिनट):** एक ऐसी स्थिति बताएं जहाँ पुराने कानूनों के कारण देरी या अन्याय हुआ हो। प्रतिभागियों से पूछें: "नए कानून इस नतीजे को कैसे बदल सकते हैं?

→ **ब्रेनस्टॉर्मिंग (10 मिनट):** छोटे-छोटे समूहों में बंट जाएं। हर समूह तीन मुख्य कारण बताएगा कि नए कानूनों को समझना क्यों ज़रूरी है। फिर अपनी बातें सबके सामने रखें।

→ मुख्य चर्चा के बिंदु:

- कानूनों को समाज में हो रहे बदलावों के साथ विकसित होना चाहिए।
- नए कानूनों का उद्देश्य न्याय दिलाने में सुधार करना, देरी कम करना और दक्षता बढ़ाना है।
- पेशेवरों/हितधारकों (जैसे वकील, पुलिस, जज) को प्रभावी ढंग से काम करने के लिए अद्यतन (updated) जानकारी की आवश्यकता है।

हालिया कानूनी सुधारों का अवलोकन:

इस खंड के अंत तक, प्रतिभागियों को ये समझ आ जाएगा:

— IPC, CrPC और एविडेंस एक्ट की जगह लेने वाले तीन नए कानूनों की बुनियादी जानकारी।

ट्रेनिंग का तरीका:

→ संक्षिप्त प्रस्तुति (10 मिनट): इन पर संक्षिप्त स्पष्टीकरण दें:

- भारतीय न्याय संहिता (BNS), 2023 - जिसने IPC की जगह ली है
- भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS), 2023 - जिसने CrPC की जगह ली है
- भारतीय साक्ष्य अधिनियम (BSA), 2023 - जिसने भारतीय साक्ष्य अधिनियम की जगह ली है

→ इंटरैक्टिव क्विज़ (10 मिनट): मुख्य कानूनी बदलावों के बारे में सरल प्रश्न पूछें। सही उत्तरों के लिए इनाम दें।

→ रोल-प्ले (10 मिनट): भूमिकाएँ (पुलिस अधिकारी, पीड़ित, वकील) बाँटें और अंतरों को उजागर करने के लिए पुराने और नए दोनों कानूनों के तहत एक मामले का अभिनय करें।

→ मुख्य चर्चा के बिंदु:

- ये कानून क्यों बदले गए?
- ये कानून रोज़मर्रा की कानूनी कार्यवाही को कैसे प्रभावित करेंगे?

ट्रेनिंग पर नोट्स

पुराने कानूनों की जगह नए कानून

- **पुराने कानून:** भारतीय दंड संहिता (IPC), आपराधिक प्रक्रिया संहिता (CrPC), और भारतीय साक्ष्य अधिनियम 150 साल से भी ज़्यादा पुराने थे।
- **नए कानून:** इनकी जगह अब ये नए कानून लाए गए हैं:
    1. **भारतीय न्याय संहिता (BNS):** इसने IPC की जगह ली है (यह अपराधों और उनकी सज़ाओं से संबंधित है)।
    2. **भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS):** इसने CrPC की जगह ली है (यह बताता है कि पुलिस

और अदालतें आपराधिक मामलों को कैसे संभालेंगी)।

3. **भारतीय साक्ष्य अधिनियम (BSA):** इसने भारतीय साक्ष्य अधिनियम की जगह ली है (यह अदालत में सबूतों के नियमों से संबंधित है)।

ये बदलाव क्यों किए गए?

- पुराने कानून बहुत पुराने हो चुके थे और साइबर क्राइम, आतंकवाद या महिलाओं की सुरक्षा जैसे आज के समय की समस्याओं से नहीं निपटते थे।
- नए कानूनों का मकसद कानूनी सिस्टम को ज़्यादा कुशल, पारदर्शी और निष्पक्ष बनाना है।

- इनका ध्यान तेज़ न्याय और अदालतों में लंबित (pending) मामलों को कम करने पर भी है।

इसका आपके लिए क्या मतलब है?

→ अगर आप किसी अपराध के शिकार हैं, तो आप कानूनी सिस्टम से तेज़ी से अपडेट और बेहतर मदद की उम्मीद कर सकते हैं।

→ अगर आप पर किसी अपराध का आरोप है, तो आपके अधिकारों को बेहतर तरीके से सुरक्षित रखा गया है, और छोटे अपराधों के लिए जेल का समय नहीं हो सकता है।

→ सभी को ऑनलाइन व्यवहार के बारे में ज़्यादा सावधान रहने की ज़रूरत है, क्योंकि अब साइबर अपराधों को बहुत गंभीरता से लिया जाता है।

→ भारत में नए आपराधिक कानूनों - भारतीय न्याय संहिता (BNS), भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS), और भारतीय साक्ष्य अधिनियम (BSA) - का लागू होना महत्वपूर्ण बदलाव ला रहा है, जो सीधे नागरिकों को प्रभावित करते हैं।

ट्रेनिंग फैसिलिटेटर/ट्रेनर के लिए दिशा-निर्देश

→ बातचीत का तरीका बनाए रखें

सिर्फ एक तरफ़ा लेक्चर देने से बचें। इसके बजाय, असली दुनिया के उदाहरणों का उपयोग करके प्रतिभागियों को शामिल करें और उन्हें अपने अनुभव साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

→ गहन सोच को बढ़ावा दें

खुले अंत वाले प्रश्न पूछें:

- आपको क्यों लगता है कि पुराने कानूनों में बदलाव की ज़रूरत थी?
- ये नए कानून न्याय देने के तरीके को कैसे प्रभावित करेंगे?

→ श्रोताओं की ज़रूरतों के हिसाब से ढालें

- अगर पुलिस अधिकारियों को ट्रेनिंग दे रहे हैं, तो प्रक्रिया संबंधी बदलावों पर ध्यान दें।

- अगर वकीलों को ट्रेनिंग दे रहे हैं, तो कानूनी तर्कों और केस हैंडलिंग पर पड़ने वाले प्रभावों को उजागर करें।
- अगर कार्यकर्ताओं और मानवाधिकार रक्षकों को ट्रेनिंग दे रहे हैं, तो सरल और संबंधित उदाहरणों का उपयोग करके बुनियादी प्रक्रियात्मक बदलावों को उजागर करें।

→ **सरल भाषा और वास्तविक जीवन के उदाहरणों का उपयोग करें**

- जटिल कानूनी शब्दों से बचें। अवधारणाओं को सामान्य परिस्थितियों से जोड़ें।

अध्याय 3: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और बदलाव की ज़रूरत

प्रशिक्षण का उद्देश्य:

इस सत्र के अंत तक, प्रतिभागी:

— भारत में आपराधिक कानूनों के विकास को समझेंगे।

— पिछले कानूनों की कमियों को पहचानेंगे।

— कानूनी सुधारों को चलाने वाले प्रमुख कारकों को पहचानेंगे।

प्रशिक्षण विधि:

→ **आइसब्रेकर गतिविधि:** "तब बनाम अब" (10 मिनट): प्रतिभागियों को दो समूहों में बाँटें। समूह

'ए' पुरानी कानूनी प्रथाओं (औपनिवेशिक कानून, पुरानी प्रक्रियाएँ, आदि) की सूची बनाएगा। समूह 'बी' आधुनिक चुनौतियों (साइबर अपराध, आतंकवाद, न्याय में देरी) की सूची बनाएगा।

→ **चर्चा:** पिछली कानूनी संरचनाओं को वर्तमान समय की ज़रूरतों से जोड़ें।

भारत में आपराधिक कानूनों का विकास:

समझें कि आपराधिक कानून ब्रिटिश शासन से लेकर वर्तमान सुधारों तक कैसे विकसित हुए।

प्रशिक्षण विधियाँ:

→ **कहानी सुनाने का तरीका (5 मिनट):**

- प्रशिक्षक भारत में आपराधिक कानूनों का इतिहास सुनाएँगे, जिसमें औपनिवेशिक

काल से पहले से लेकर ब्रिटिश-युग के आईपीसी (**IPC),** सीआरपीसी (**CrPC)** और साक्ष्य अधिनियम (**Evidence Act) (1860-1872)** तक शामिल होगा।

- प्रमुख मील के पत्थरों (जैसे, स्वतंत्रता के बाद के संशोधन) पर प्रकाश डालें।

→ **समयरेखा गतिविधि (10 मिनट)**

- प्रतिभागी ऐतिहासिक घटनाओं (कागज की पर्चियों पर लिखी हुई) को सही क्रम में व्यवस्थित करेंगे।
- समाज पर इन कानूनों के प्रभाव पर चर्चा करें।

→ **मुख्य चर्चा बिंदु**

- ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से विरासत में मिले कानून।

- स्वतंत्रता के बाद के कानूनी संशोधन।
- आपराधिक न्याय प्रणाली बड़े पैमाने पर अपरिवर्तित क्यों रही।

सुधारों के प्रमुख कारक:

— **2023** में आपराधिक कानून सुधार क्यों लाए गए, इसे समझें।

— सामाजिक और तकनीकी प्रभावों को पहचानें।

प्रशिक्षण विधियाँ:

→ **विचार-मंथन (5 मिनट):**

- पूछें: आज अपराध से संबंधित सबसे बड़ी चुनौतियाँ क्या हैं**?** (जैसे, साइबर अपराध, आतंकवाद, महिला सुरक्षा)।
- बोर्ड पर जवाब लिखें।

→ **भूमिका-निभाना (10 मिनट):**

- भूमिकाएँ सौंपें (जैसे, पीड़ित, पुलिस अधिकारी, वकील, न्यायाधीश)। पुराने बनाम नए कानूनों के तहत डिजिटल धोखाधड़ी से जुड़े एक मामले का अनुकरण करें।
- चर्चा करें कि सुधार न्याय में तेजी लाने में कैसे मदद करते हैं।

→ **मुख्य चर्चा बिंदु:**

- आधुनिक अपराध (साइबर अपराध, डिजिटल साक्ष्य)।
- नए कानूनों में पीड़ित-केंद्रित दृष्टिकोण।
- तीव्र गति से न्याय और प्रक्रियात्मक दक्षता।

- वैश्विक कानूनी रुझान (अन्य देशों ने अपने कानूनों को कैसे अद्यतन किया)।

आपराधिक कानून सुधारों की आवश्यकता पर प्रशिक्षकों के लिए अतिरिक्त नोट्स

स्वतंत्रता के बाद आपराधिक कानूनों में कौन से प्रमुख संशोधन किए गए?

कई संशोधनों ने विशिष्ट मुद्दों को संबोधित किया, जिनमें शामिल हैं:

- 1973: सीआरपीसी (CrPC) को मुकदमे की प्रक्रियाओं और जमानत प्रावधानों में सुधार के लिए पूरी तरह से बदल दिया गया।
- 1983: दहेज मृत्यु को आपराधिक बना दिया गया (धारा 304बी आईपीसी)।
- 2005: घरेलू हिंसा अधिनियम ने महिलाओं को बेहतर सुरक्षा प्रदान की।
- 2013: निर्भया अधिनियम ने यौन अपराधों के लिए बलात्कार कानूनों और दंड को सख्त किया।

आपराधिक न्याय प्रणाली बड़े पैमाने पर अपरिवर्तित क्यों रही?

- इसके प्रमुख कारणों में शामिल हैं:
- औपनिवेशिक कानूनी ढाँचों पर अत्यधिक निर्भरता।
- नौकरशाही और राजनीतिक जड़ता - कानूनों में सुधार एक धीमी प्रक्रिया है।
- तकनीकी अनुकूलन की कमी - कानूनी प्रणालियाँ आधुनिक अपराधों के साथ तालमेल नहीं बिठा पाईं।

औपनिवेशिक मानसिकता ने आईपीसी, सीआरपीसी और साक्ष्य अधिनियम को कैसे प्रभावित किया?

- व्यक्तिगत अधिकारों पर राज्य की शक्ति पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- राजद्रोह (धारा 124ए आईपीसी) जैसे अपराधों के लिए कठोर दंड।

- पुलिस के पास गिरफ्तारी और हिरासत पर अत्यधिक नियंत्रण था।
- न्याय प्रणाली को मामलों को कुशलता से हल करने के बजाय देरी करने के लिए डिज़ाइन किया गया था।

न्याय वितरण में देरी के क्या कारण थे?

- **मामलों का बैकलॉग (पेंडेंसी):** भारतीय अदालतों में 4.4 करोड़ से अधिक मामले लंबित हैं।
- **कम न्यायाधीश-जनसंख्या अनुपात।**
- **पुरानी प्रक्रियाएँ:** मैन्युअल दस्तावेज़ीकरण, जटिल फाइलिंग सिस्टम।
- **कमजोर जाँच प्रणाली:** फोरेंसिक और डिजिटल उपकरणों की कमी।

राजद्रोह कानून (धारा 124ए आईपीसी) का दुरुपयोग कैसे किया गया?

- मूल रूप से अंग्रेजों द्वारा असंतोष को दबाने के लिए पेश किया गया था, इसे अक्सर:
- कार्यकर्ताओं, पत्रकारों और राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ इस्तेमाल किया जाता था।
- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उल्लंघन करने के लिए इसकी आलोचना की गई थी।
- 2023 में, इसे भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस), 2023 के तहत एक अधिक परिभाषित राष्ट्रीय सुरक्षा कानून से बदल दिया गया।

नए कानूनों में पीड़ित-केंद्रित दृष्टिकोण क्या है?

- महिलाओं, बच्चों और कमजोर समूहों के लिए मजबूत सुरक्षा।
- अपराधों की रिपोर्ट करने के लिए सरलीकृत प्रक्रियाएं (जैसे, ऑनलाइन एफआईआर)।

- पीड़ितों के लिए मुआवजा और मामलों का तेजी से निपटारा।

नए कानून त्वरित न्याय और दक्षता में कैसे सुधार करते हैं?

- गंभीर अपराधों के लिए समय-सीमा के भीतर जाँच पूरी करने की समय-सीमा।
- डिजिटल केस मैनेजमेंट का बढ़ा हुआ उपयोग।
- अदालती सुनवाई में प्रक्रियात्मक देरी में कमी।

अध्याय 4: नए कानून के तहत पीड़ित और आरोपी के अधिकार

प्रशिक्षण का उद्देश्य:

इस सत्र के अंत तक, प्रतिभागी:

— नए कानून के तहत पीड़ितों के अधिकारों को समझेंगे।

— आरोपी व्यक्तियों के अधिकारों और निष्पक्ष सुनवाई के सिद्धांत को पहचानेंगे।

— न्याय वितरण में पीड़ित संरक्षण और आरोपी अधिकारों के बीच संतुलन पर चर्चा करेंगे।

प्रशिक्षण विधियाँ:

→ **आइसब्रेकर गतिविधि:** "सबके लिए न्याय" (10 मिनट) प्रतिभागियों से पूछें: "आपके अनुसार, एक पीड़ित के लिए सबसे महत्वपूर्ण अधिकार क्या हैं? और आरोपी के बारे में क्या?" उनके जवाब एक बोर्ड पर लिखें और उन्हें दो कॉलम में वर्गीकृत करें: पीड़ित के अधिकार और आरोपी के अधिकार।

→ **चर्चा:** दोनों पक्षों के लिए न्याय को संतुलित करने के महत्व पर प्रकाश डालें।

नए कानून के तहत पीड़ितों के अधिकार:

— नए कानूनी ढांचे के तहत पीड़ितों के बढ़े हुए अधिकारों को समझें और पहचानें कि नए कानून पीड़ित संरक्षण और भागीदारी को कैसे सुनिश्चित करते हैं।

प्रशिक्षण विधियाँ:

→ **केस स्टडी चर्चा (10 मिनट):** पुराने बनाम नए कानूनों के तहत हिंसा या धोखाधड़ी के पीड़ित का एक मामला प्रस्तुत करें। पूछें: नए कानून ने पीड़ित के लिए न्याय में कैसे सुधार किया?

→ **भूमिका-निभाना (10 मिनट):** प्रतिभागियों को पीड़ित, पुलिस अधिकारी, वकील और न्यायाधीश में विभाजित करें। नए कानूनों के तहत एक मामले को कैसे संभाला जाता है, इसका अनुकरण करें, जिसमें पीड़ित के अधिकारों पर जोर दिया जाए।

नए कानून के तहत पीड़ितों के प्रमुख अधिकार

भाग लेने का अधिकार - पीड़ित कानूनी प्रक्रिया का सक्रिय रूप से हिस्सा बन सकते हैं।

सुरक्षा का अधिकार - विशेषकर महिलाओं और बच्चों के लिए, डराने-धमकाने से बचाव के उपाय।

मुआवजे का अधिकार - गंभीर अपराधों के पीड़ितों के लिए सरकार द्वारा अनिवार्य मुआवजा।

त्वरित सुनवाई का अधिकार - पीड़ितों से जुड़े मामलों का समय-सीमा के भीतर निपटारा होता है।

कानूनी सहायता का अधिकार - आर्थिक रूप से कमजोर पीड़ितों के लिए मुफ्त कानूनी सहायता।

नए कानून के तहत आरोपी के अधिकार:

— ये पहचानना कि आरोपी व्यक्तियों के भी कानूनी अधिकार होते हैं।"

— न्याय प्रणाली में निष्पक्ष सुनवाई के महत्व को समझना।

ट्रेनिंग के तरीके:

→ **बहस (10 मिनट):** ग्रुप ए बहस करेगा: 'पीड़ितों के अधिकारों को आरोपी के अधिकारों से ज़्यादा प्राथमिकता मिलनी चाहिए।' ग्रुप बी बहस करेगा: 'आरोपी तब तक निर्दोष है जब तक दोष साबित न हो जाए।' ट्रेनर चर्चा को नियंत्रित करेंगे, ये सुनिश्चित करते हुए कि दोनों विचारों पर गौर किया जाए।

→ **नकली जाँच (10 मिनट):** भागीदार पुलिस अधिकारी और बचाव वकील के रूप में काम करेंगे। उन्हें निष्पक्ष जाँच सुनिश्चित करनी होगी और साथ ही आरोपी के अधिकारों की रक्षा भी करनी होगी।

नए कानून के तहत आरोपी के मुख्य अधिकार

निर्दोषता की अनुमान का अधिकार - कोई भी तब तक दोषी नहीं है जब तक साबित न हो जाए।

कानूनी प्रतिनिधित्व का अधिकार - सभी चरणों में वकील तक पहुँच का अधिकार।

निष्पक्ष सुनवाई का अधिकार - एक निष्पक्ष न्यायाधीश को दोनों पक्षों को सुनना चाहिए।

आत्म-अपराध के खिलाफ अधिकार - कबूल करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता।

अपील का अधिकार - एक अनुचित फैसले को चुनौती देने का अवसर।

नए कानून के तहत पीड़ितों और आरोपियों के अधिकारों पर फैसिलिटेटर के लिए अतिरिक्त नोट्स

अगर आप किसी अपराध के शिकार हैं:

नए कानून पीड़ितों के अधिकारों को प्राथमिकता देते हैं और कानूनी प्रक्रिया को अधिक सहायक और कुशल बनाने का लक्ष्य रखते हैं। यहाँ बताया गया है कि यह आपको कैसे प्रभावित करता है:

→ **<u>तेज़ अपडेट और पारदर्शिता:</u>**

नए कानूनों के तहत, बलात्कार, मारपीट या तस्करी जैसे गंभीर अपराधों के पीड़ितों को 90 दिनों के भीतर अपने मामले पर नियमित अपडेट पाने का अधिकार है। उदाहरण के लिए, यदि आप यौन उत्पीड़न की शिकार हैं, तो अब सिस्टम आपको जांच की प्रगति, दायर किए गए आरोप और मुकदमे की स्थिति के बारे में सूचित रखने के लिए बाध्य है।

→ **<u>पीड़ित प्रभाव बयान:</u>**

पीड़ित अब एक पीड़ित प्रभाव बयान प्रस्तुत कर सकते हैं ताकि वे बता सकें कि अपराध ने उन्हें शारीरिक, भावनात्मक और आर्थिक रूप से कैसे प्रभावित किया है। यदि आप एक हिंसक हमले के शिकार हुए हैं, तो आप अपराध के कारण हुए आघात, चिकित्सा खर्च और आय के नुकसान का वर्णन कर सकते हैं। इस बयान पर सज़ा सुनाते समय विचार किया जाएगा, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि अदालत को हुए नुकसान की पूरी सीमा समझ में आ जाए।

→ **<u>पीड़ितों के लिए मुआवज़ा:</u>**

अदालतें अब आरोपी को पीड़ितों को चिकित्सा खर्चों, आघात, या आजीविका के नुकसान के लिए मुआवज़ा देने का आदेश दे सकती हैं। यदि आप किसी हिट-एंड-रन दुर्घटना में घायल हुए हैं, तो अदालत अपराधी को आपके अस्पताल के बिल, पुनर्वास लागतों को कवर करने का आदेश दे सकती

अगर आप किसी अपराध के आरोपी हैं:

नए कानून कानूनी प्रक्रिया में निष्पक्षता सुनिश्चित करते हुए, आरोपी के अधिकारों की रक्षा पर भी ध्यान केंद्रित करते हैं:

→ **<u>अधिकारों का बेहतर संरक्षण:</u>**

पुलिस को आपके अधिकारों के बारे में लिखित रूप में सूचित करना होगा, जिसमें कानूनी सहायता का अधिकार और चुप रहने का अधिकार शामिल है। उदाहरण के लिए, यदि आपको चोरी के मामले में पूछताछ के लिए हिरासत में लिया जाता है, तो पुलिस को आपको आपके अधिकारों को समझाते हुए एक लिखित दस्तावेज़ देना होगा।

→ **<u>छोटे अपराधों के लिए सामुदायिक सेवा:</u>**

छोटे अपराधों जैसे छोटी चोरी या सार्वजनिक उपद्रव के लिए, अदालत अब जेल की सज़ा के बजाय सामुदायिक सेवा का आदेश दे सकती है, जैसे कि सार्वजनिक स्थानों की सफाई करना या पेड़ लगाना।

→ **<u>आसान ज़मानत प्रावधान:</u>**

नए कानून आरोपी व्यक्तियों के लिए ज़मानत प्राप्त करना आसान बनाते हैं, खासकर छोटे अपराधों के लिए या यदि वे पहली बार अपराध करने वाले हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप पर एक मामूली झगड़े का आरोप लगाया गया है जिसके परिणामस्वरूप कोई गंभीर चोट नहीं लगी है, तो आपको जल्दी ज़मानत मिलने की अधिक संभावना है, जिससे आप मामला चलने के दौरान अपना दैनिक जीवन जारी रख सकें।

अध्याय 5: अपराधों पर नए कानूनों की प्रतिक्रिया

नए कानूनों की अपराधों पर प्रतिक्रिया को समझना

— नए कानूनों के तहत संबोधित किए गए प्रमुख अपराधों की पहचान करना।

— मुख्य कानूनी बदलावों और उनके महत्व को समझना।

ट्रेनिंग के तरीके:

→ **केस स्टडी पर चर्चा (10 मिनट):** "दो छोटे केस प्रस्तुत करें: साइबर अपराध (ऑनलाइन

धोखाधड़ी, डिजिटल उत्पीड़न) और हिंसक अपराध (यौन उत्पीड़न, संगठित अपराध)।

→ **चर्चा के प्रश्न:**

- पुराने कानूनों के तहत क्या चुनौतियाँ थीं?
- नए कानून बेहतर समाधान कैसे प्रदान करते हैं?

→ **ग्रुप एक्टिविटी (10 मिनट):** "भाग लेने वालों को छोटे-छोटे ग्रुप में बाँट दें। हर ग्रुप एक अपराध चुने और नए कानूनों के तहत हुए कानूनी बदलावों की सूची बनाए। हर ग्रुप अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करेगा।

→ **भूमिका-निर्वाह: "कानून कार्रवाई में" (20 मिनट):**

सेटअप: भागीदार एक नकली अपराध परिदृश्य में पीड़ित, पुलिस, आरोपी, वकील और न्यायाधीश की भूमिका निभाते हैं।"

→ **परिदृश्य के उदाहरण:**

- एक व्यक्ति ऑनलाइन धोखाधड़ी का शिकार होता है–नए कानून कैसे मदद करते हैं?
- यौन उत्पीड़न का एक मामला–न्याय अधिक कुशलता से कैसे मिलता है?

→ **चर्चा:**

- नए कानूनों के तहत इन मामलों को संभालने में क्या बदलाव आया?
- क्या नए कानून तेज़ और निष्पक्ष न्याय सुनिश्चित करते हैं?

मुख्य कानूनी बदलाव:

साइबर अपराध कानून मजबूत किए गए - डिजिटल साक्ष्य को अब पूरी तरह से मान्यता प्राप्त है।

यौन अपराधों के खिलाफ सख्त कानून - तेज़ सुनवाई और मजबूत पीड़ित सुरक्षा।

संगठित अपराध और आतंकवाद - विस्तारित परिभाषाएँ और कड़ी सज़ाएँ।

फास्ट-ट्रैक न्याय - जांच और अदालत के मुकदमों के लिए समय-सीमा निर्धारित।

अध्याय 6 आपराधिक न्याय प्रणाली की जवाबदेही: नए अपराध और कड़ी सज़ाएँ

नए अपराधों और कड़ी सज़ाओं को समझना

— कानूनी सुधारों के तहत प्रमुख नए अपराधों की पहचान करना।

— कठोर दंड के पीछे के तर्क को समझना।

ट्रेनिंग के तरीके:

→ आइसब्रेकर एक्टिविटी: "न्याय या ज्यादती?" (10 मिनट)

बोर्ड पर अलग-अलग सज़ाएँ (जैसे **आजीवन कारावास, जुर्माना, मौत की सज़ा**) लिखें। पूछें: 'क्या कड़ी सज़ाएँ हमेशा अपराध दर को कम करती हैं?' प्रतिभागी **हाँ** या **नहीं** में वोट दें और संक्षेप में अपने विचार समझाएँ।

→ **चर्चा:** यह विचार प्रस्तुत करें कि न्याय प्रणाली में जवाबदेही केवल सज़ा के बारे में नहीं है, बल्कि निष्पक्षता, दक्षता और पारदर्शिता के बारे में भी है।

→ **केस स्टडी चर्चा (10 मिनट):** दो छोटे केस उदाहरण प्रस्तुत करें:

- एक हिंसक भीड़ का हमला (लिंचिंग) - नया कानून इस अपराध को कैसे मानता है?

- झूठे सबूत या पुलिस कदाचार का मामला - जवाबदेही कैसे सुनिश्चित की जाती है?

→ **चर्चा प्रश्न:**

- पुराने कानूनों के तहत क्या सज़ा थी?
- नए कानून जवाबदेही को बेहतर तरीके से कैसे संबोधित करते हैं?

→ **ग्रुप एक्टिविटी (10 मिनट):** प्रतिभागियों को 3 समूहों में विभाजित करें। प्रत्येक समूह एक नया अपराध चुने और समझाए:

- कानून में क्या बदलाव किए गए?
- ये बदलाव न्याय में कैसे सुधार करेंगे? समूह 2 मिनट के सारांश में अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करें।

→ **भूमिका-निर्वाह:** कार्रवाई में जवाबदेही (20 मिनट)

सेटअप: प्रतिभागी एक नकली मामले के परिदृश्य में पीड़ित, पुलिस अधिकारी, वकील और न्यायाधीश की भूमिका निभाते हैं।

→ **परिदृश्य के उदाहरण:**

- एक पुलिस अधिकारी पीड़ित की शिकायत को नज़रअंदाज़ करता है - सिस्टम उन्हें कैसे जवाबदेह ठहराता है?
- एक निर्दोष व्यक्ति के खिलाफ एक झूठा आपराधिक मामला दर्ज किया जाता है - नए कानून ऐसे दुरुपयोग को कैसे रोकते हैं?

→ **चर्चा**

- कड़ी सज़ाएँ सिस्टम में कैसे सुधार करती हैं?

- हम अत्यधिक अपराधीकरण के बिना न्याय को कैसे संतुलित कर सकते हैं?

पीड़ितों के लिए न्याय पर ध्यान

→ **पीड़ित-केंद्रित दृष्टिकोण:**

नए कानून पीड़ितों के अधिकारों और ज़रूरतों को प्राथमिकता देते हैं। उदाहरण के लिए:

— बलात्कार, मारपीट, या तस्करी जैसे अपराधों के पीड़ितों को अब 90 दिनों के भीतर उनके मामले की प्रगति पर नियमित अपडेट मिलेगा।

— अब एक पीड़ित प्रभाव बयान दर्ज किया जा सकता है, जिससे पीड़ितों को यह समझाने की अनुमति मिलती है कि अपराध ने उन्हें शारीरिक, भावनात्मक और आर्थिक रूप से कैसे प्रभावित किया है।

नए कानूनों में मुख्य बदलाव

— पीड़ितों के लिए मुआवज़ा: अदालतें अब आरोपी को चिकित्सा खर्चों, आघात, या आजीविका के नुकसान के लिए पीड़ित को मुआवज़ा देने का आदेश दे सकती हैं।

→ **छोटे अपराधों के लिए सामुदायिक सेवा:** छोटे-मोटे अपराधों जैसे छोटी-मोटी चोरी, सार्वजनिक उपद्रव, या मामूली झगड़ों के लिए, अदालत अब जेल के बजाय सामुदायिक सेवा का आदेश दे सकती है।

— इसमें सार्वजनिक स्थानों की सफाई करना, पेड़ लगाना, या आश्रयों में काम करना शामिल हो सकता है। इस बदलाव का लक्ष्य जेलों में भीड़ कम करना और पहली बार अपराध करने वालों को सुधारने का मौका देना है।

नए कानूनों में मुख्य बदलाव

गंभीर अपराधों के लिए कड़ी सज़ाएँ

→ **महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अपराध:**

— **नाबालिग से बलात्कार:** 18 साल से कम उम्र की लड़की के साथ सामूहिक बलात्कार के लिए सज़ा और कड़ी कर दी गई है, जिसमें मौत की सज़ा का प्रावधान भी है।

— **शादी का झूठा वादा:** अगर कोई महिला का यौन शोषण करने के लिए शादी का झूठा वादा करता है, तो यह अब एक दंडनीय अपराध है।

— **यौन उत्पीड़न:** यौन उत्पीड़न की परिभाषा का विस्तार किया गया है जिसमें ऑनलाइन उत्पीड़न (जैसे सहमति के बिना आपत्तिजनक संदेश या तस्वीरें भेजना) भी

शामिल है।

→ **भीड़ द्वारा पीट-पीट कर हत्या:**

— भीड़ द्वारा पीट-पीट कर हत्या, जिसे पुराने कानूनों में स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया गया था, अब एक विशिष्ट अपराध है जिसके लिए कड़ी सज़ाएँ हैं, जिनमें आजीवन कारावास या मौत की सज़ा भी शामिल है।

→ **आतंकवाद और संगठित अपराध:**

— नए कानून आतंकवाद और संगठित अपराध से निपटने के लिए कड़े प्रावधान पेश करते हैं। उदाहरण के लिए:

नए कानूनों में मुख्य बदलाव

- तस्करी, अवैध हथियारों का व्यापार, और मानव तस्करी जैसे कृत्य अब संगठित अपराध के रूप में वर्गीकृत किए गए हैं।
- आतंकवादी गतिविधियों को अब और व्यापक रूप से परिभाषित किया गया है, और सज़ाएँ अधिक कड़ी हैं।

<u>तेज़ी से न्याय:</u>

→ **समय-सीमा में जाँच और मुकदमे:**

पुलिस को 90 दिनों के भीतर आरोप पत्र दाखिल करना होगा, और अदालत को मुकदमा समाप्त होने के 45 दिनों के भीतर फैसला सुनाना होगा।

उदाहरण के लिए:

— यदि आप किसी संपत्ति विवाद में शामिल हैं, तो मामले का तेज़ी से निपटारा होने की संभावना अधिक है, जिससे लंबे मुकदमे का तनाव और वित्तीय बोझ कम होगा।

→ **ट्रायल के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग**

अदालतें अब वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के ज़रिए ट्रायल कर सकती हैं और सबूत रिकॉर्ड कर सकती हैं। यह उन मामलों के लिए खास तौर पर उपयोगी है जहाँ गवाह या आरोपी अलग-अलग जगहों पर होते हैं।

— उदाहरण के लिए, यदि आप किसी मामले में गवाह हैं लेकिन दूसरे शहर में रहते हैं, तो आप लंबी दूरी तय किए बिना गवाही दे सकते हैं।

नए कानूनों में मुख्य बदलाव

→ **ज़ीरो एफ.आई.आर.:**

अब ज़ीरो एफ.आई.आर. किसी भी पुलिस स्टेशन में दर्ज की जा सकती है, भले ही अपराध कहीं भी हुआ हो। यह सुनिश्चित करता है कि पीड़ित बिना किसी देरी के अपराधों की रिपोर्ट कर सकें।

राजद्रोह कानून में बदलाव

→ पुराने राजद्रोह कानून (आईपीसी की धारा 124ए) को हटा दिया गया है। इसकी जगह, नए कानून उन कृत्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता को खतरा पहुँचाते हैं।

— उदाहरण के लिए, सरकार या देश के खिलाफ हिंसा या नफरत भड़काना अब दंडनीय है, लेकिन केवल सरकार की आलोचना करना अपराध नहीं है।

आरोपी के अधिकार

→ **अधिकारों का संरक्षण:**

— गिरफ्तार व्यक्तियों को उनके अधिकारों के बारे में लिखित रूप में सूचित किया जाना चाहिए, जिसमें कानूनी सहायता का अधिकार और चुप रहने का अधिकार शामिल है।

— यह सुनिश्चित करने के लिए कि उन्हें हिरासत में यातना या दुर्व्यवहार न किया जाए, आरोपी की मेडिकल रिपोर्ट गिरफ्तारी के 24 घंटे के भीतर तैयार की जानी चाहिए।

→ **ज़मानत के प्रावधान:**

— नए कानून कुछ मामलों में आरोपी व्यक्तियों के लिए ज़मानत प्राप्त करना आसान बनाते हैं, खासकर यदि अपराध छोटा हो या आरोपी पहली बार अपराध करने वाला हो।

नए कानूनों में मुख्य बदलाव

जोड़े गए नए अपराध

→ **हिट एंड रन मामले**

अगर आप किसी हिट एंड रन दुर्घटना में शामिल हैं, तो घटनास्थल से भागना अब एक विशिष्ट अपराध है जिसके लिए कड़ी सज़ाएँ हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई ड्राइवर दुर्घटना का कारण बनता है और पीड़ित की मदद किए बिना चला जाता है, तो उन्हें कारावास सहित गंभीर दंड का सामना करना पड़ सकता है।

नए कानूनों में मुख्य बदलाव

→ **जानवरों के प्रति क्रूरता:**

जानवरों के प्रति क्रूरता के कृत्य, जैसे आवारा जानवरों को ज़हर देना या नुकसान पहुँचाना, अब दंडनीय हैं। यदि कोई व्यक्ति जानबूझकर किसी आवारा कुत्ते को नुकसान पहुँचाते हुए पकड़ा जाता है, तो उन्हें नए कानूनों के तहत जवाबदेह ठहराया जा सकता है।

→ **झूठी शिकायतें:**

झूठी शिकायतें दर्ज करना या झूठे सबूत देना अब एक दंडनीय अपराध है। यह कानूनी प्रणाली के दुरुपयोग को हतोत्साहित करता है। यदि कोई व्यक्तिगत दुश्मनी निकालने के लिए आप पर झूठा आरोप लगाता है, तो उन्हें नए कानूनों के तहत दंडित किया जा सकता है।

नए कानूनों में मुख्य बदलाव

साक्ष्य नियमों में बदलाव

→ **फोरेंसिक साक्ष्य:**

— नए कानून जांच में फोरेंसिक विज्ञान के उपयोग पर जोर देते हैं। उदाहरण के लिए, हत्या या बलात्कार जैसे गंभीर अपराधों के लिए फोरेंसिक विशेषज्ञों को अपराध स्थल पर जाना अनिवार्य होगा।

→ **गवाह सुरक्षा:**

— संवेदनशील मामलों (जैसे आतंकवाद या संगठित अपराध) में गवाह अब सुरक्षा का अनुरोध कर सकते हैं, और उनकी पहचान गोपनीय रखी जा सकती है।

पॉपुलर एजुकेशन एंड एक्शन सेंटर (पीस)

पॉपुलर एजुकेशन एंड एक्शन सेंटर (पीस) लोकप्रिय शिक्षा के माध्यम से जमीनी स्तर पर सामाजिक कार्रवाई को मजबूत करने के लिए समर्पित एक सामूहिक है। हम प्रमुख विकास प्रतिमानों में भागीदारी के सतही उपयोग को चुनौती देते हैं, हाशिए के समुदायों के लिए वास्तविक सशक्तिकरण पर जोर देते हैं। हमारा दृष्टिकोण लोगों को एजेंसी को पुनः प्राप्त करने, निहित शक्ति संरचनाओं को चुनौती देने और अपनी वास्तविकताओं को बदलने के लिए ज्ञान और क्षमता से लैस करता है।

पॉपुलर एजुकेशन एंड एक्शन सेंटर (पीस)
ए-124/6, कटवारिया सराय, नई दिल्ली - 110016 दूरभाष: 011-26858940
Email: peaceactdelhi@gmail.com
Website: https://popularеducation.in